S.R.S.D. Memorial Shiksha Shodh Sansthan, Agra, India
UGC Sl. No.64431

INQUISITIVE TEACHER

A Peer Reviewed Refereed Research Journal
ONLINE ISSN-2455-5827
Volume V, Issue II, December 2018, pp. 145-149
www.srsshodhsansthan.org

दर्शकों की रूचि और स्थल संग्रहालयः मुमताज महल स्थल संग्रहालय का अध्ययन

संजू
संग्रहालय विज्ञान विभाग, राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, जनपथ, नई दिल्ली, भारत

सारांश– *किसी भी देश के इतिहास को जानने में संग्रहालय एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। आज संपूर्ण विश्व में प्रत्येक देश का अपना एक राष्ट्रीय संग्रहालय है जो इस देश के गौरवमय इतिहास को प्रदर्शित करता है। राष्ट्रीय संग्रहालयों के साथ–साथ स्थल संग्रहालय भी अत्यंत महत्वपूर्ण होते है क्योंकि ये किसी ऐतिहासिक इमारत के इतिहास को बताते है।*

राष्ट्रीय संग्रहालयों को देखने में दर्शक काफी रूचि रखते है क्योंकि ये उनके देश के इतिहास को प्रस्तुत करते है परन्तु स्थल संग्रहालय को घूमने में उनकी रूचि कितनी है यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। इस लेख में यह प्रस्तुत किया गया है कि ऐतिहासिक इमारत घूमने आये दर्शकों की संग्रहालय घूमने में कितनी रूचि है ताकि स्थल संग्रहालय के बनाये जाने के औचित्य को समझा जा सका। संग्रहालय का कार्य केवल संग्रह करना ही नहीं अपितु लोगों को उस संग्रह से अवगत कराना भी होता है। अतः यह पता करना अत्यंत ही आवश्यक हो जाता है कि संग्रहालयों को देखने में दर्शकों की रूचि है भी या नहीं।

मुख्य बिंदु – *दर्शकों की रूचि, स्थल संग्रहालय, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, मुमताज महल संग्रहालय*

प्रस्तावना

संग्रहालय एक अलाभकारी संस्था है जो समाज की सेवा में तथा उसके विकास के लिए कार्यरत है। यह जनता हेतु खुली है जो कलाकृतियों को एकत्र संरक्षित, उन पर शोध, विचारों का आदान–प्रदान तथा मानवजाति की मूर्त–अमूर्त सांस्कृतियों का प्रदर्शन करती है। इसका उद्देश्य मानव को ज्ञान, शिक्षा तथा मनोरंजन प्रदान करना होता है।

भारत में संग्रहालय की अवधारणा अति प्राचीन काल से देखी जा सकती है जिसमें चित्रशाला का उल्लेख मिलता है किन्तु भारत में संग्रहालय का दौर यूरोप में संग्रहालय के विकास के बाद हुआ। पुरातत्व अवशेषों को संग्रहित करने की सबसे पहले आवश्यकता ईस्वी 1796 में महसूस की गई, जब बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी ने पुरातत्वीय, नृजातीय, भूवैज्ञानिक, प्राणीविज्ञान दृष्टि से महत्व रखने वाले विशाल संग्रह को एक जगह पर एकत्र करने की आवश्यकता महसूस की। एशियाटिक सोसाइटी द्वारा पहला संग्रहालय 1814 में 'इंडियन म्यूजियम' कोलकाता के नाम से खोला गया। भारत में स्थल संग्रहालयों का सृजन सर जॉन मार्शल के आने के पश्चात् हुआ जिन्होंने सारनाथ (1904), आगरा (1906), अजमेर (1908), लालकिला (1909) जैसे स्थल संगहालयों की स्थापना की।

भारतीय संग्रहालय सर्वेक्षण के पूर्व महानिदेशक हरग्रीव्स द्वारा स्थल संग्रहालयों की बड़ी अच्छी तरह व्याख्या की गई है–

भारत सरकार की यह नीति रही है कि प्राचीन स्थलों से प्राप्त किए गए छोटे और लाए तथा ले जाने योग्य पुराने अवशेषों को इन के निकट उन इमारतों में रख जाए जिन से यह संबंधित है ताकि उनके स्वाभाविक वातावरण में उनका अध्ययन किया जा सके और स्थांतरित हो जाने के कारण उन से ध्यान ना हट जाए।

मार्टिन व्हीलर द्वारा 1996 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में एक पृथक संग्रहालय शाखा का सृजन किया गया। आजादी के बाद भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में स्थल संग्रहालयों के विकास में तेजी आई। वर्तमान में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के नियंत्रणाधीन 44 स्थलीय संग्रहालय है।

मुमताज महल संग्रहालय–

भारत में सबसे पहले स्थापित किया गया पुरातत्वीय स्थल संग्रहालय लालकिले का स्थल संग्रहालय मुमताज महल है। चूंकि यह संग्रहालय लाल किले के मुमताज महल कक्ष में बनाया गया है इसलिए इसे मुमताज महल संग्रहालय भी कहा जाता है। इस संग्रहालय में कुल 13,0003 पुरातन वस्तुएं है। जिसमें 12,719 को संरक्षित किया गया है केवल 284 वस्तुएं ही प्रदर्शित की गई है। ऐसा माना जाता है कि पूरे भारत में मुगलकाल का सबसे कीमती व महत्वपूर्ण संग्रह इस संग्रहालय में है। मुमताज महल संग्रहालय के संग्रह में 11,000 पुरातन सिक्के है तथा अन्य हजारों अभिलेख, फरमान, अधिकार पत्र, अस्त्र–शस्त्र, चित्र आदि भी शामिल है। इसके अतिरिक्त खुदाई में परवर्ती मुगल काल के कुछ कपड़े, विविध प्रकार के हाथीदांत व जेड़ की वस्तुए, चीनी मिट्टी के बर्तन, चांदी के सामान आदि भी लालकिले में पाये गए। मुमताज महल संग्रहालय में पांच भाग है।

1. प्रथम भाग प्रवेश भाग है इसमें शाहजहां और उसके पूर्वाधिकारी से संबंधित वस्तुएं प्रदर्शित है। सुल्तान साहिब कुरैन अमीर तैमूर गुरगान की पेटिंग, तैमूरनामा, मौलाना अब्दुल हतेफी की पाण्डुलिपि (1488–89), (1336–1405) ईरान के सुल्तान तहमत्सप सफवी का खंजर, अरेबिक व फारसी अभिलेख बाबर के दादा की पेटिंग (1463) जंहागीर का फरमान (1622) आदि कुछ महत्वपूर्ण संग्रह है।

2. मध्य भाग में पत्थर, जेड़ और हाथीदांत से बना सामान है जिसमें खंजर के हत्थे, चाइनीज प्लेट, चांदी की घड़ी, फारसी पेन डिब्बा, संगमरमर का कटोरा आदि शामिल है।

3. तृतीय भाग में पेंटिंग को प्रदर्शित किया गया है जिसमें शाहजहां नामा से लड़ाई का चित्र, जोधाबई और नदीर शाह, कुवांर श्री बलवंत सिंह की राजस्थानी और परवर्ती मुगल पेंटिंग, कुरान की पाण्डुलिपियों के कुछ चित्र आदि शामिल है।

4. चतुर्थ भाग बहादुर शाह जफर को समर्पित है इस भाग में 1857 के युद्ध में नवाब पटौदी तथा बहादुर शाह जफर द्वारा प्रयोग किये गए शस्त्रों को प्रदर्शित किया गया है। दिल्ली की घेराबंदी के समय जनरल जे निकोलसन द्वारा प्रयोग की गई 'दूरबीन' भी यह प्रदर्शित हैं इस भाग का मुख्य आकर्षण बहादुर शाह जफर की पत्नी जीनत महल का अश्ममुद्रण (लिथोग्राफ) है।

5. अंतिम भाग में जीनत महल के कपड़े, बहादुर शाह जफर द्वितीय का कोट, तथा मुगलों द्वारा युद्ध में प्रयोग किये गए शस्त्रों (खंजर, तलवार कुल्हारी) को प्रदर्शित किया गया है।

प्रदर्शित वस्तुओं के अलावा संरक्षित संग्रह में बहुत बड़ी मात्रा में सिक्के, पत्थर तथा संगमरमर के अभिलेख, शस्त्र और कवच, शाही राजपत्र, सुलेख कला के नमूने, हस्तलिखित लिपि, पेंटिंग और छायाचित्र शामिल है। सिक्को के संग्रह में दिल्ली सल्तनत से लेकर मुगल काल तक के सिक्के सम्मिलित है। जिसमें सबसे प्रमुख जहांगीर द्वारा चलाए गए राशिचक्रीय सिक्के है।

दर्शकों की रूचि–

स्थल संग्रहालयों में दर्शकों की रूचि जानने के लिए मुमताज महल स्थल संग्रहालय में दर्शकों का साक्षात्कार किया गया। इसे मुख्यताः तीन भागों विभाजित किया गया है। 1) जागरूकता 2) संग्रहालय में समस्या 3) संग्रहालय के प्रति दर्शकों का दृष्टिकोण।

1. **जागरूकता–**

दर्शकों से लिये गये साक्षात्कार के अनुसार 90ः दर्शक ऐसे थे जिन्हें यह पता नहीं था कि लालकिले में मुमताज महल संग्रहालय है। दिल्ली से बाहर के दर्शकों को इस संग्रहालय के बारे में पता पहली बार लालकिला भ्रमण के दौरान चला। इंटरनेट पर भी इस बारे में ज्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं है। 10ः दर्शक ऐसे थे जिन्हें आंशिक रूप से यह पता था कि लाल किले में संग्रहालय है। यह जानकारी उन्हें अपने मित्र या परिजनों से पता चली थी।

2. **संग्रहालय में समस्या–**

दर्शकों के अनुसार संग्रहालय में उन्हें कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ा जैसे संग्रहालय में कही भी दिशा–निर्देशन नहीं है जिससे यह समझना मुश्किल है कि संग्रहालय में कैसे घूमना जाए? संग्रहालय एक छोटी जगह पर बनाया गया है जिस कारण वहां काफी भीड़ होती है, उस भीड़ को नियंत्रित करने के लिए भी कोई कर्मचारी या गार्ड की व्यवस्था नही है।

3. **संग्रहालय के प्रति दर्शकों का दृष्टिकोण–**

दर्शकों के अनुसार स्थल संग्रहालय भी उतने ही महत्वपूर्ण होते है जितने राष्ट्रीय या राज्य संग्रहालय। चूंकि ये संग्रहालय किसी स्थान या काल विशेष के होते है। अतः इन संग्रहालयों में प्रदर्शित संग्रह भी उस विशेष स्थान या उस विशेष समयावधि को प्रस्तुत करता है। संग्रहालय में उन्हें कुछ नया सीखने को मिलता है। मनोरंजन के साथ–साथ उनके ज्ञान में भी बढ़ोत्तरी होती है जो उन्हें उस इमारत के इतिहास को जानने में एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है।

खुदाई में मिली सभी पुरातन वस्तुओं को राष्ट्रीय संग्रहालय में प्रदर्शित कर पाना मुश्किल होता है इसलिए इन वस्तुओं को लोगों के समक्ष प्रदर्शित करने के लिए स्थल संग्रहालयों का निर्माण किया जाता है। किसी ऐतिहासिक इमारत से मिली वस्तुओं को उसी इमारत में प्रदर्शित करने से दर्शकों में एक प्रकार का लगाव उत्पन्न होता है उनके लिए उस इमारत व उन पाई गई वस्तुओं के इतिहास को समझने में आसानी होती है।

वर्तमान समय में संग्रहालय अनौपचारिक शिक्षा की एक संस्था की तरह काम करता है जहां किसी भी आयु का व्यक्ति, किसी भी समय आकार अपनी इच्छानुसार ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इमारत घूमने से उन्हें केवल ऊपरी ज्ञान अर्थात् वे जो देखते है उन्हें वही समझ जाता है परन्तु उस इमारत के इतिहास; उस काल के इतिहास, संस्कृति को समझने के लिए संग्रहालय भ्रमण अत्यंत आवश्यक है।

दर्शकों में स्थल संग्रहालयों के प्रति जागरूकता का अभाव है परन्तु वे स्थल संग्रहालय को भी उतना ही महत्वपूर्ण मानते है जितना वे ऐतिहासिक इमारत को मानते है। अतः वे इमारत के साथ–साथ संग्रहालय घूमने में भी रूचि दिखाते है। दर्शकों के अनुसार मुमताज महल स्थल संग्रहालय ने उन्हें काफी आकर्षित किया परन्तु उन्हें संग्रहालय में कुछ समस्याओं का

भी सामना करना पड़ा जिसके लिए उन्होंने कुछ सुझाव भी दिये। जैसे भीड़ को नियंत्रित करने के लिए कर्मचारियों का होना, संग्रहालय में दिशा–निर्देशन का होना, समय–समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम व कार्यशालाओं का आयोजन करते रहना आदि। स्थल संग्रहालय के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिसमें अस्थायी प्रदर्शनी तथा कार्यशाला शामिल है। संग्रहालय द्वारा विश्व संग्रहालय दिवस मनाया जाता है। 18 मई, विश्व संग्रहालय दिवस के दिन कार्यक्रम व प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। ताकि लोगों में ज्यादा से ज्यादा जागरूकता फैले। तथा संग्रहालय से जुड़ी समस्याओं को दूर करने के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने इस संग्रहालय को किसी बड़ी इमारत, जो लालकिला परिसर के अंदर ही स्थित है, में स्थानांतरित करने का प्रस्ताव सरकार (संस्कृति मंत्रालय) के समक्ष रखा है जल्दी ही इसे अन्य इमारत में स्थानांतरित कर दिया जायेगा जहां दर्शकों को किसी भी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा तथा वे आराम से सुविधापूर्वक संग्रहों को देख पायेंगे।

References

1. Ahrar Husain, Museum of India Learning Resource Centers, Sana Publishers, New Delhi, 2001, 60-61
2. Anil Goel, Museum and Collection of Delhi, Harman Publishing House, New Delhi, 1998, 3
3. lat; tSu] E;wfTk;e ,oa E;wfT+k;ksykWth ,d ifjp;] dfudk izdk"ku] cM+kSnk] 2001] i`- 48
4. http://www.asi.nic.in/sitemuseum/2016
5. N.L Batra, Delhi's Red Fort by the Yamuna, Niyobi Books, 2007, 58-59